© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

साहित्य में नारी : अस्तित्व के लिए संघर्ष :

डा. सुदेश कुमारी, हिन्दी प्राध्यापिका

ISSN : 2348-5612 © URR

स्त्रियों की मानसिकता तेजी से बदल रही है। शिक्षित एवं कामकाजी महिलाओं के जीवन में मतभेद बढ़ रहे हैं और अधिक मनोवैज्ञानिक समस्यांए उत्पन्न हो रही है। नारी के प्रति नारी की ही संघर्ष–चेतना सर्वाधिक तीव्र हो रही है। यह चेतना क्यों तीव्र हो रही हैं, इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए अनेक कहानी–लेखिकाओं ने कहानियाँ लिखी हैं। नायिका जो कि विरोधी प्रवृत्ति की होती है या कहानी का रूख अपनी ओर खींचने का प्रयास करने वाली स्त्री पात्राओं के व्यवहार को अगर कभी पारिभाषित नहीं किया जा सकता या कारणों को लेखिकाएँ लिख नहीं सकती तो कभी इनमें ईर्ष्या–द्वेष भाव, हीन–भावना, प्रतिस्पर्धा, आत्म विश्वास की कमी, असुरक्षा सहानुभूति की कमी आदि कारण पाए जाते हैं।

यदि हम नारी मनोविज्ञान के माध्यम से नारी के जीवन में ताक–झांक करें तो उचित होगा। नारी के मनोविज्ञान में एक बात जो प्रायः मिलती है और जो नारी में संघर्ष या ईर्ष्या–द्वेष का कारण बनती है। विशेष तौर पर वह दाम्पत्य संबंधो में अधिक मुखर होती है। यह भावना सुन्दर स्त्री को देखकर जाग्रत होती है। दूसरे, नारी तुरन्त अपने से सुन्दर नारी को नीचा दिखाने का प्रयत्न करती है, समाज अर्थात् दूसरों की निगाहों में उन्हें गिराने की चाह उनमें होती है, स्त्रियों की मनोवृति ही उनकी प्रगतिशील मार्ग को अवरूद्ध करती है। शशिप्रभा शास्त्री की 'चयन' कहानी में 'सुरीली' की आकर्षक देहयष्टि जेठानियों के हृदयों के बीच ईर्ष्या का बीज बो देती है। कुरूप महिलाएँ चाहती हैं कि सभी महिलाएँ उन्हीं की तरह बौनी, सांवली और भारी हों। सुन्दर महिलाएँ जलन–कुंठा का शिकार बनती है। अक्सर उनका सौन्दर्य, उनका आकर्षण ही उनकी जिन्दगी की सबसे बड़ी अवरोधक शक्ति बन जाता है। उनके हर कर्म उनकी हर अपलब्धि पर लोगों का ध्यानाकर्षण होता है। 'छोटे–बंद समाज में वह स्वयं को एक जेल में बंद पाती है, स्वयं में ही वह सिमट जाती है, दूसरों के डर से, निंदा के भय से वह दबी–दबी ही रहती है। उसका वयक्तित्व उभर ही नहीं पाता। यह बहुत बड़े दुर्भाग्य की बात है कि नारी की परस्पर ईर्ष्या की भावना ही उसके मार्ग को अवरूद्ध कर देती है।

अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित व अति शिक्षित महिलाओं में से न जाने कितनी स्त्रियां ऐसी है, जो ईर्ष्या–द्वेष की शिकार नहीं है। इस विषय में स्त्री का कोई पैमाना नहीं कि वह कैसी स्थिति में कहाँ और कैसे किसी से भी, विशेषकर स्त्री से, ईर्ष्या–द्वेष अपने मन में उत्पन्न कर ले– जाने अनजाने अपने व्यक्तित्व, अपने सौन्दर्य, अपने मकान, अपने कपड़े–गहने, अपनी सफलता और अपनी अन्य खूबियों के कारण क्योंकि इस विषय में उच्चवर्ग की गुणी–सफल महिलाओं को बिल्कुल वैसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसा कि निचले तबके की पढ़ी–लिखी महिलाओं को। लड़कियों में नीचता, हीनता, कुटिलता, ईर्ष्या, लोभ आदि अधिक होता है। इसे कुछ इस तरह समझा जा सकता है। शान्तम्मा बाई का कार्य करती है, मगर महीन और सूक्ष्म कशीदा की कला में निपुण है। सास के भय से उसे अपराधियों की भांति छिपकर कढ़ाई करनी पड़ती है। सहानुभूति, प्रशंसा और प्रोत्साहन की अपेक्षा उसे डांट, फटकार, ईर्ष्या का सामना करना पड़ता है– 'दिल से डर नहीं निकलता। पिछली बार भी भगवान ने उसका साथ नहीं दिया था। इन दिनों अगर बाई की साड़ी न काढ़ रही होती तो जाने कितनी दुखी रहती। वह नहीं जानती, ऐसा क्यों होता है पर मन खराब होने पर सुई–धागा लेकर बैठ जाने से उसे बहुत शान्ति मिलती है .....पिछले वर्ष, बच्चे की मृत्यु के बाद, जब उसका हृदय अपने पाप और संताप का बोझ सहने से इंकार कर देता था, जब उसकी अतृप्त कोख और कुंठित देह हाहाकार कर उठती थी, वह इसी सुई–धागे का सहारा लेती थी। पर तब कपड़े पर दो एक फूल खिलते ही सास आकर ताना मार जाती थी 'क्या औरत है तू। अभी बच्चा मरा, अभी फूल होना तेरे को ?'[1]

तसलीमा नसरीन लिखती है– 'यह एक बीमारी है। इसकी शिकार स्त्रियां अधिकतर होती हैं। लड़कियों की हीन मानसिकता बनाए रखना मानो समाज का नैतिक दायित्व है। अधिकतर लोग सोचते है कि लड़कियों के इनफीरियर हुए बिना परिवार नहीं टिकता। .....यह बड़ी हद तक सुपीरियर बने रहने का एक बढ़िया तरीका है। इस चालाकी के सहारे सभी पुरूष आसानी से सुपीरियर बन जाते है और स्त्रियां रह–रहकर इनफीरियरिटि काम्पलैक्स का शिकार हो जाती हैं।'[2]

इस तरह की हीनभावनाओं से ग्रस्त कर समाज स्त्री के सभी मार्गो में रूकावटें भर देता है– वह है हीन और हर बात में कम होने की भावना। स्त्री को प्रारम्भ से ही सैक्स के आधार पर पुरूषों से हीन माना जाता है। यह भावना जन्म के साथ ही उनमें भर दी जाती है कि पुरूष से हर दृष्टि में कमजोर है, हेय है। इस प्रकार आज उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त भी स्त्रियां यह नहीं मान पाती कि वे पुरूषों के समान है या उनके समान कार्य करने में सक्षम हैं। यह हीनभावना ही स्त्री में ईर्ष्या को जन्म देती है। घरेलू महिलाएँ ही नहीं बल्कि नौकरी–पेशा वाली महिलाएँ भी ईर्ष्या के इस भाव से सम्पन्न हुए बिना नहीं रहती। गृहणियां नौकरीपेशा महिलाओं की ईर्ष्या का शिकार बनती है।

महिला कहानीकारों का ध्यान भी स्त्री के इस ईर्ष्या–द्वेष भाव की ओर गया है और उन्होंने इसको भी अपनी कहानियों में स्थान दिया है। मृदुला गर्ग की 'खाली' की नायिका नए मकान में असुविधा से खाना बनाने को तैयार है लेकिन मकान मालकिन के यहां खाने का आमंत्रण स्वीकर कर अपने पति को उसकी तारीफ करने का अवसर नहीं देना चाहती।'[3] ममता कालिया की